सामाजिक संस्था संपूर्णा
संपूर्ण विकास की ओर अग्रसर
(गैर सरकारी संगठन)

"आलेख"

घर के दुश्मनों को पहचानो
चीन को सलाह - युद्धमदेही के स्थान पर शांतिमदेही की याचना करो

-डॉक्टर शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

विदेशी संस्कृति में पले बढ़े हुए और जिन्हें दुर्भाग्यवश हमारी संस्कृति का भान नहीं है वे शायद नहीं जानते कि भारतीय रण क्षेत्र से भागते नहीं बल्कि मृत्यु या विजय में से एक चीज को प्राप्त करते हैं। आज चीन का भारत को आँख दिखाना हम सब भारतीयों को सहन नहीं हो रहा है। इतिहास जैसे हमें फिर कुछ सीखा रहा है।चीन ने अक्साई चीन और हजारों वर्ग मीटर भूमि पर 1962 में कब्जा किया और अभी तक वहां जमा बैठा है।

उनके जमाने में तो अक्साई चीन भूमि का महत्वपूर्ण भाग नहीं था। क्योंकि वह बंजर था। जिस तरह से गंजी खोपड़ी पर बाल नहीं उगते उसी तरह उनके लिए अक्साई चीन बेकार भूमि थी। उस समय के भारतीय जनतंत्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बात यह रही कि सत्तारूढ़ पार्टी ने सत्ता पर काबिज होने के साथ ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने का प्रमाण पत्र जारी करने की शक्ति भी अपने हाथो में रख ली। वे अपने को छोड़कर सबको राष्ट्रविरोधी कहने लगे।

आजादी का प्रमाण पत्र देने वालों से कोई यह पूछे कि जब से जनता ने उन्हें सत्ता से धक्का दिया है वह एकदम बौरा गए हैं। उनकी मानसिकता इतनी विकृत हो गई है कि उन के लिए अब देश के दुश्मन और देश के लिए जान देने वालों में कोई भेद रह गया है। भारत के वीर सैनिकों के बलिदान पर व्यंग कसते हैं। दुश्मन के घर में जाकर उसे मारने वालों की वीरता पर संदेह उत्पन्न करते हैं। डोकलाम के समय देश की सरकार पर विश्वास नहीं करते। चीन के राजदूत के घर पर परिवार सहित डिनर करते हैं। पहले तो इंकार करते हैं। बाद में स्वीकार करते हैं। हां ,हम चीनी राजदूत के घर डिनर पर गए थे। यह तो हमारी जनतांत्रिक व्यवस्था है कि ऐसे व्यक्तियों को भी बर्दाश्त किया जा रहा है। नहीं तो उनकी जगह कानून के हिसाब से कहीं और ही होनी चाहिए।

अब हमें देशद्रोह की मानसिकता सिद्ध करने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। इसी महीने की 15-16 की रात को हमारे वीर सैनिकों ने जय बजरंगबली के नारों के साथ जो चीनी सैनिकों की गर्दन और रीढ़ की हड्डी तोड़ी है कि उनकी संख्या बताने में चीन भी हिचकिचा रहा है। जिससे कि वहां सरकार के खिलाफ विद्रोह ना हो जाए। क्या यह दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है कि जनता द्वारा सत्ता के हटाने के बाद बौखला कर हमारे वीर सैनिकों पर भी आरोप लगा रहे हैं और ऐसे आरोप उन्होंने कहीं वामपंथियों के पितृ देश चीन में लगाए होते तो उन्हें खुद भी पता नहीं होता कि वह कहां बंद है।

यह ही नहीं राजमाता भी युवराज से आगे बढ़कर सरकार से हमारी सेना की रणनीति, हथियारों और सिपाहियों की संख्या सार्वजनिक करने के लिए कह रही हैं। परंतु यह नहीं बता रही कि उनकी पार्टी और

शी जिनपिंग की पार्टी का क्या गुप्त समझौता है कि जिसके अंतर्गत वह भारत की रणनीति को उजागर करने के लिए कह रही हैं।

चीनी सेना को पता होना चाहिए कि उनके मुकाबले में हमारी बिहार रेजिडेंट के सैनिक थे। यह वह बिहार है जहां चंद्रगुप्त, समुद्रगुप्त जैसे सम्राट पैदा हुए हैं। जिन्होंने अफगानिस्तान तक भारत की धर्म ध्वजा लहराई थी। अंत में मैं यह कहकर बात समाप्त करना करती हूँ कि भारतीयों के खून में ही वीरता है। दसवें गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने गुरु मंत्र दिया था कि सवा लाख से एक लड़ाऊं, तो नाम गुरु गोविंद कहाऊं। यही मंत्र था कि उन्होंने चमकौर के युद्ध में दस लाख मुगलों की सेना को परास्त किया था। हम चीनियों की संख्या बल से नहीं डरते।

लेकिन हमें देश में चीनियों के सहायकों पर नजर रखनी पड़ेगी। अभी तो युद्ध का पहला चरण भी आरंभ नहीं हुआ। परंतु चीन और उसके हिमायती पाकिस्तान को डर के मारे पसीने आ रहे हैं। विजय भारत की होगी। भारत के वीर जवानों की होगी। देश के 130 करोड़ देशवासियों की होगी।